राग

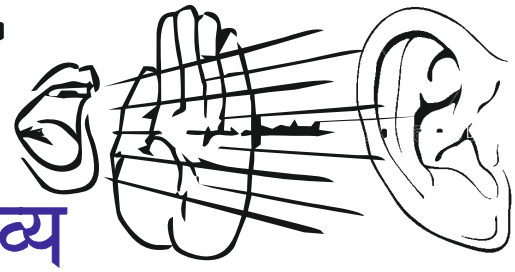

रा-रास्ता, ग-गनतव्य

अशोक 'मानव'

रास्ता गनतव्य का। राग अपनी भावना व्यक्त करने का तरीका है जो मार्ग बनाकर अपने गनतव्य तक पहुँचकर वही बनाकर अपना उद्येश्य पूरा करता है। राग अभिव्यक्ति की एक कला है। प्राकृतिक अर्थो में शरीर के अंदर बनने वाली ऊर्जा राग बनकर प्रकृति में फैल जाती है जो लोगों के अंदर वही भाव बनाकर अपने गुणों का विस्तार करती है। वैज्ञानिक परिभाषा में राग मानव तकनीक है जो उतार-चढ़ाव से गतिशील होकर दूसरों को गतिमान कर देती है। राग मानव का वह गुण है जो अपनी गुणात्मकता को गनतव्य तक पहुँचाकर उसी गुण का बनाने के लिए क्रियाशील हो जाता है। राग राही का रास्ता बनाने की क्रिया करता है। राग एक रस है जो भावना बनने पर शरीर की रासायनिक क्रिया से बनता है। ऐसे तो एक गाड़ी में कई लोग सवार हो के चलते है पर एक व्यक्ति कई गाड़ियों में एक साथ सवार होकर नही चल सकता है। राग सिर्फ मानव को ही नही प्रभावित करता है बल्कि अन्यजीवों और प्रकृति को भी प्रभावित कर अपने भाव को स्थापित कर देता है। राग मानव अभिव्यक्ति की वह कला है जो वैज्ञानिक रूप से अपने गुणों का विस्तार दूसरे के अंदर स्थापित कर देता है। राग सिर्फ गायन विद्या को ही नहीं कहते है बल्कि अपने अंदर के भाव को व्यक्त करने के उस तरीके को कहते है जो दूसरे के दिल में अपना स्थान बना ले। राग शांत अवस्था में भाव विभोर हो जाने के बाद व्यक्त हो पाता है। राग अपने गुण की एक निर्माणात्मक क्रिया है। राग शान्त अवस्था की नम ऊर्जा है जो अपनी गुणात्मक जमीन पर स्थापित हो जाती है। राग के विपरीत शब्द द्वेष, क्रोद्ध, और जलन की अभिव्यक्ति है जो गर्म होने के कारण ऊपर उड़ जाती है। मानव जब अपने गुणों के भाव में भावविभोर हो जाता है और कोई अन्य विषय उसक अंदर नही आ पाता है तब शरीर के अंदर उस गुण की ऊर्जा रासायनिक क्रिया करने लगती है। उसके बाद जो ऊर्जा शरीर के अंदर बनती है वह उसी गुण की हो जाती है जो गले में पहुँचकर कण्ठ से टकराकर उतार-चढ़ाव की ऊर्जा बनाने लगती है। वही ऊर्जा गतिमान होकर राग बनकर शब्दों में व्यक्त होने लगती है जो कान के पर्दे से टकराकर उतार-चढ़ाव की गति से शरीर के अंदर जाने लगती है। इसका प्रकाश तत्व खुशबू के रूप में ऊपरी सतह मस्तिष्क में जाकर नसो के माध्यम से शरीर में घूमने लगता है और उसका नम तत्व (गुणात्मक जल) निचली सतह के अंदर फैलने लगता है जो सुगंधित प्रकाश तत्व से ऊर्जा प्राप्त करके शरीर के अंदर अपने गुणों की रासायनिक क्रिया करने लगता है। जिससे व्यक्ति प्रभावित होकर उसी गुण के बारे में सोचने लगता है। उसकी सोच के कारण श्वशन क्रिया से आने वाली प्राणवायु में उसी गुण की ऊर्जा आने लगती है। इस क्रिया से शरीर के अंदर सुगंध रूप में प्रकाश तत्व, गुण के रूप में जल तत्व और प्राणवायु से हवा तत्व एक गुण के हो जाते है। यही तीनों तत्व किसी भी निर्माण के लिए आवश्यक होते है। शरीर के अंदर यही तीनों तत्व एक गुण के होकर रासायनिक क्रिया करने लगते है। जिससे उस गुण का प्रवाह पूरे शरीर में होने लगता है और व्यक्ति उसी भाव से प्रभावित होकर उसी भाव को बनाने लगता है। जिससे उसके शरीर का पर्दाथ उसी गुण का बनने लगता है। जब यही अवस्था अधिक समय तक रूक जाती है। तब व्यक्ति के शरीर का पदार्थ उसी गुण का हो जाता है। परिणाम स्वरूप उसकी प्रवृति उसी गुण की बन जाती है और व्यक्ति उसी राह पर चलने लगता है। यह क्रिया तभी सम्भव हो पाती है जब व्यक्ति उसी गुण का हो और भाव विभोर होकर राग व्यक्त करे, नही तो उसका प्रभाव क्षणिक रह जाता है। फिल्मी दुनिया में जो लोग उसी गुण के होते हुए भाव विभोर होकर अपनी राग व्यक्त करते है उन्ही से लोग प्रभावित होते है और उन्हें अपना आदर्श मानकर उसी राह पर चलने लगते है। ऐसे ही लोगो को जनता में प्रसिद्धी मिल पाती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी जो लोग दूसरे के दर्शन को अपनी राग बनाते है और उनके अंदर वह गुण नहीं होता है। उनका प्रभाव क्षणिक होता है। उनके साथ कुछ समय तक लोग चलते है, हकीकत जान लेने के बाद लोग दूर हो जाते है। जिनके अंदर आध्यात्मिक गुण होता है वे दूसरे के दर्शन को अपनी राग नही बनाते। बल्कि उनका अपना गुणात्मक दर्शन होता है जो राग बनकर व्यक्त होता है जिसपर युगों तक लोग चलते रहते है। राजनीतिक क्षेत्र में भी जो लोग दूसरे को आदर्श मानकर खुद उसे नहीं अपनाते उनकी राग पर्दे की हो जाती है। जब उसकी हकीकत लोग जानते है तो साथ छोड़ देते है पर जो लोग इमानदार आदर्श होते है। उनका भाषण एक राग बन जाता है। जिसे आदर्श मानकर लोग अपनाते है और उस राह चलने लगते है। इसी प्रकार राग जब गुणात्मक होती है तो लोगों का आदर्श बन जाती है और लोग उसी राह पर चलने लगते है। राग को आदर्श राग बनाने के लिए उस गुण का होना अनिवार्य है। ऐसा न होने पर लोग अपनी राग से ज्यादा समय तक प्रभावित नही कर सकते है। राग अच्छी बनाने के लिए व्यक्ति को उसी भाव में भाव विभोर हो जाने की जरूरत होती है। जिस गुण को प्रभावशाली बनाना हो उस गुण को धारण कर उसे अपनी प्रवृत्ति बनाले और उसी गुण के भाव में भाव विभोर हो जाय। अन्य किसी विषय को न आने दे इसके बाद जो राग बनकर शब्दों में व्यक्त होगी वह प्रभावशाली राग बन जायेगी। जिससे लोग प्रभावित होकर अपना आदर्श बना लेगे और उस राह पर चलने लगेंगे। आप सब लोग अपनी राग को महान बनायें जिसे लोग आदर्श मानकर उस राह पर चलने लगें। इस शुभकामना के साथ।